Hindi Chapter -2018

उत्तरी भारत का सन्त साहित्य

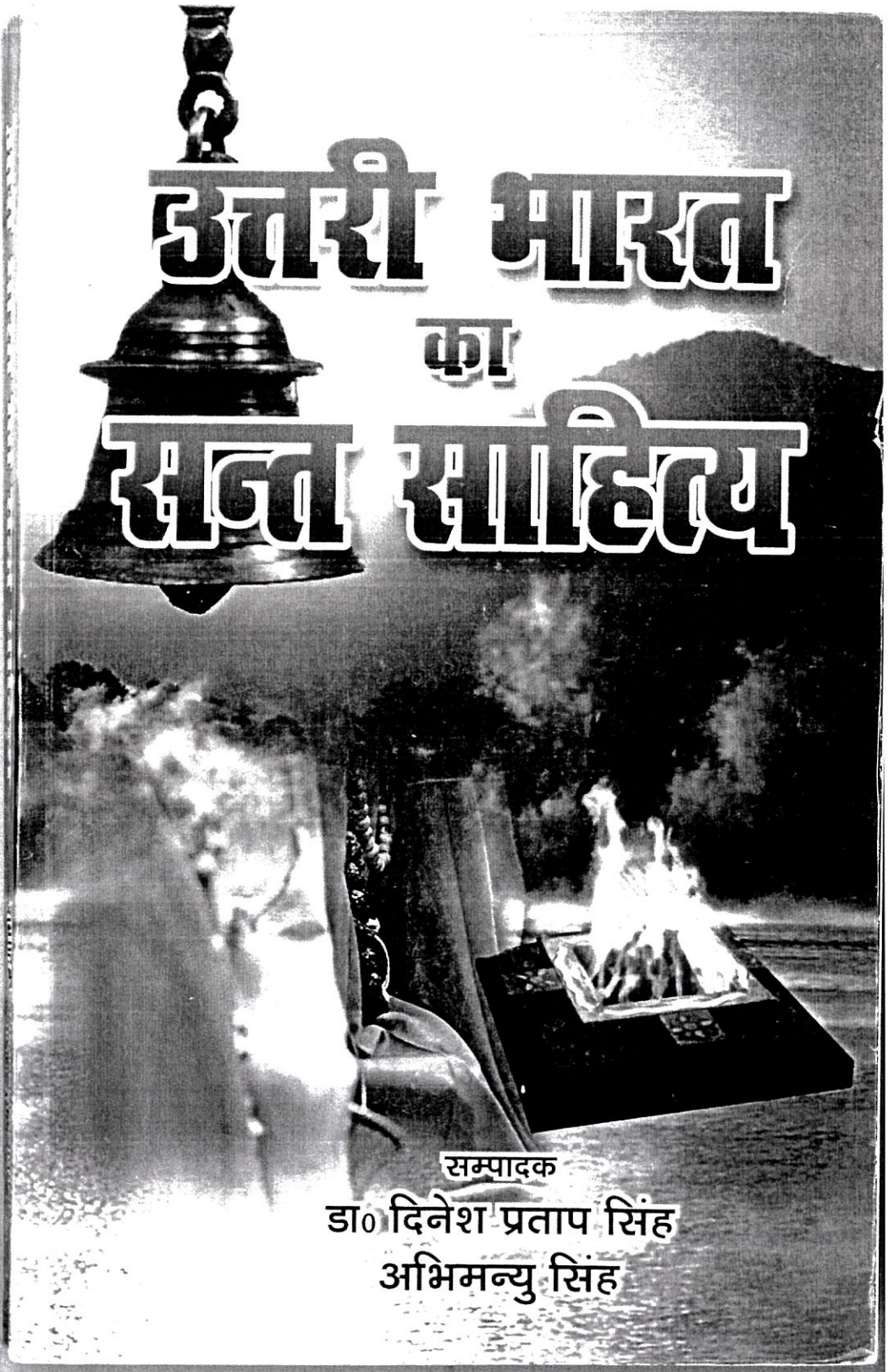

सम्पादक

डा० दिनेश प्रताप सिंह

अभिमन्यु सिंह

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

UTTARI BHARAT KA SANT SAHITYA

by

Dr. Dinesh Pratap Singh
Abhimanyu Singh

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

ISBN : 978-81-924329-4-6

प्रकाशक
अक्षर प्रकाशन
185, नया मम्फोर्डगंज, इलाहाबाद-211 002
e-mail. : rameshkbari@rediffmail.com

अक्षर संयोजन
अथर्व ग्राफिक्स
102/85, महाबीरन गली, बाँसमण्डी, इलाहाबाद-211 003

मुद्रक
भार्गव आफसेट
2, बाई का बाग, इलाहाबाद-211 003

संस्करण
प्रथम, 2018

मूल्य
₹ 350.00

अनुक्रमणिका

- **सन्त-परम्परा** 15
  डा. बद्री प्रसाद पंचोली
- **सन्त साहित्य की प्रासंगिकता** 19
  डा. विप्लवेन्द्र कुमार वर्मा
- **उत्तरी भारत का सन्त साहित्य सशक्त, प्रभावकारी एवं समृद्ध** 24
  शिव कुमार पाण्डेय
- **उत्तरी भारत का सन्त साहित्य** 32
  अशोक प्रियदर्शी
- **उत्तरी भारत में सन्तों का साहित्य में अतुलनीय योगदान** 37
  मनोज शर्मा
- **उत्तरी भारत का सन्त साहित्य** 41
  डा. प्रीति श्रीवास्तव
- **राम रसिक सन्त साहित्य** 44
  आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी
- **उत्तरी भारत का महिला सन्त साहित्य** 58
  डा. यशवन्त सिंह
- **हिन्दी के सन्त कवियों की सामाजिकता** 65
  डा. राजन यादव

- सिंधी सन्त कवियों का साहित्यिक अवदान 73
  ज्ञान प्रकाश टेकचंदाणी
- विरागी भाव के यायावर सन्त 77
  अखिलेश कुमार शर्मा
- उत्तर भारत के दरबारी सन्त कवि 82
  डा. आलोक कुमार सिंह
- मिथिलांचल के लोककंठ में आबद्ध सन्त साहित्य 90
  मीनाक्षी मीनल
- बज्जिकांचल के सन्त : मगनीराम 98
  डा. ब्रजनन्दन वर्मा
- राजस्थान के सन्त कवियों का योगदान 101
  डा. सरोज सिंह
- सन्तन को कहाँ सीकरी सो काम 108
  मनोज ज्वाला
- विपुल निरंजनी साहित्य 113
  डा. भँवर कसाना
- सन्त साहित्य परम्परा : निर्गुण साहित्य 120
  डा. उमेश शुक्ल
- राधास्वामी के सत्संग में साहित्य 124
  शैलेन्द्र प्रसाद सिंह
- रामचरित के प्रस्तोता महर्षि वाल्मीकि और उनका रामायण 130
  डा. ऋषिकेश मिश्र
- आचार्य अभिनवगुप्त 143
  प्रा. प्रशान्त देशपांडे

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

- सन्त अमृतवाग्भवाचार्य एवं उनका साहित्य 146
  डा. ओम प्रकाश पारीक
- महर्षि मेंहीं के साहित्य में अध्यात्म-चेतना 153
  डा. अरुण कुमार भगत
- या लकुटी अरु कामरिया पर 162
  डा. श्रीराम परिहार
- वैश्विक हिन्दुत्त्व का संस्थापक सन्त 168
  डा. मालती
- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्य एवं सामाजिक चेतना 173
  डा. ऋतुध्वज सिंह
- सामाजिक एकात्मता का प्रयास : तुलसी 179
  डा. मिथिलेश शर्मा
- भक्ति शिरोमणि महाकवि सूरदास 186
  डा. उषा मिश्रा
- मीरांबाई और उनकी भक्ति चेतना 200
  ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल
- हिन्दी साहित्य में बेजोड़ हैं : कबीर 216
  डा. श्यामसुन्दर पाण्डेय
- उत्तर भारतीय सन्त परम्परा में सामाजिक जागरण में कबीर का योगदान 225
  डा. भरत ठाकोर
- सन्त रविदास की मानवीय चेतना 234
  डा. जयश्री सिंह
- सन्त साहित्य और दरिया साहब बिहारवाले 240
  कुमारी साक्षी राय

- सन्त दरियावजी 243
  लालसिंह पुरोहित
- सन्त पीपा की काव्य साधना एवं जीवन दर्शन 247
  अजीत कुमार पटेल
- स्नेही सन्त दादू दयाल 252
  डा. सन्तोष मोटवानी

□□

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

सामाजिक एकात्मता का प्रयास : तुलसी

डा. मिथिलेश शर्मा

आधुनिक समाज पूर्व की तुलना में बहुत प्रगति कर चुका है। विज्ञान, तकनीक, संस्कृति, दर्शन सभी आगे बढ़ने की होड़ में जुटे हुए हैं, और सबका लक्ष्य एक ही है-"मानवतावाद"। धार्मिक क्षेत्र में ईश्वर एवं उसकी अलौकिक शक्तियों का आश्रय सन्तों व समाज सुधारकों ने मानवसुख एवं सामाजिक प्रगति लाने के लिए किया। सदैव ही मानव समाज मानवीयता के आदर्श को लेकर आगे बढ़ता रहा है और आगे भी बढ़ता रहेगा। मानव के क्रिया-कलापों को जन-समुदाय से जोड़ने वाली मुख्य शक्ति प्रत्येक मानव में व्याप्त मानवीयता है। जिसका महत्त्व सदैव ही अनुकरणीय रहेगा।

तुलसीयुगीन समाज अनेक कुरीतियों से ग्रसित था। पारस्परिक वैमनस्य, जातिभेद और छुआछूत का भूत जनता के सिर पर ताडंव कर रहा था। समाज में अंधविश्वास इस तरह व्याप्त था कि सामाजिक मूल्यों की स्थिति लगभग न के बराबर थी। तुलसी समाज को एकत्मता के सूत्र में पिरोना चाहते थे, यही उनके रामराज्य का उद्देश्य भी था। यही स्वप्न प्रेमचन्द और महात्मा गाँधी ने भी देखा था। सिर्फ, अभिव्यक्ति अलग थी नजरिया वही था। वे तद्युगीन संपूर्ण समाज को रामभक्ति में तल्लीन देखना चाहते थे। रामभक्ति से अभिप्राय वे ऊँच-नीच का भेदभाव समाप्त कर, समाज में परस्पर प्रेम की भावना को स्थापित करना चाहते थे। उनका रामराज्य कुछ इस प्रकार था जिसमें-

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी।

x x x

सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

कहकर कर्म को महत्त्व दिया वहीं 'योगस्थः कुरु कर्माणि' कहकर कर्म का विधान अनासक्त अवस्था में श्रेयस्कर बतलाया तथा "ज्ञानाग्निः सर्व-कर्माणि भस्मसत्कुरुते अर्जुन"। कहकर ज्ञान के महत्त्व को बतलाया। इस प्रकार गीता में एकात्मता का रूप तो मिला पर विरोध किसी न किसी रूप में चलता रहा। वैष्णव प्रचारकों ने जब कर्म और भक्ति का दलन देखा तो उनमें प्रतिक्रिया हुई। जिसके फलस्वरूप श्रीरामानुजाचार्य ने भक्ति का प्रचार किया। उस समय श्रीमद्भागवत के आधार पर भक्ति के दो रूप थे- एक प्रेम प्रधान और दूसरी ज्ञान प्रधान। विवादास्पद स्थितियों से बचने के लिए हम इतना कह सकते हैं कि मानव जीवन की पूर्णता इन तीनों के समन्वय पर ही आधारित है। महाकवि तुलसी ने यमुना को कर्म का प्रतीक, सरस्वती को ज्ञान का प्रतीक कहकर त्रिवेणी के संगम की कल्पना की। कर्म ज्ञान और भक्ति के साथ-साथ, हिन्दू के दो प्रमुख समुदायों- शैव और वैष्णव, दो प्रमुख दार्शनिक दृष्टियों- अद्वैत और विशिष्टद्वैत, दो आध्यात्मिक दृष्टियों- सगुण और निर्गुण, दो उपासना मार्गों- ज्ञान और भक्ति में एक अद्भुत समन्वय स्थापित कर समाज को नई दिशा प्रदान की।

यथा-

ग्यानहिं भगतिहिं नहिं कछु भेदा, उभय हरहिं भव संभव खेदा।
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा, ग्यान भगति जनु धरै शरीरा।

शैव-वैष्णव भावना में एकात्मता

तद्युगीन भारत शैव और वैष्णव भावना के द्वन्द का अखाड़ा बना हुआ था। यद्यपि, तुलसी से पूर्व भी रामकथा द्वारा शैव और वैष्णवों को मिलाने का प्रयास जारी था। किन्तु इसे पूर्णता तक पहुँचाने का श्रेय तुलसी को ही है। शिव की नगरी काशी में तुलसी ने प्रत्यक्ष शैव और वैष्णव की कटुता का अनुभव किया और अपनी रचनाओं द्वारा इन विरोधी भावनाओं में एकात्मता लाने का सफल प्रयास किया। "मानस" के मंगलाचरण में 'रामसीता' की वन्दना से पूर्व 'भवानीशंकर' की वंदना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। एक तरफ तुलसीदासजी भगवान् शिव के मुख से-**सोइ मम इष्ट देव रघुवीरा, सेवत जाहि सदामुनि धीरा।** कहलवाते हैं, तो दूसरी ओर श्रीराम के मुख से **संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास। ते नर करहिं कलप भरि, घोर नरक महुँ वास।।** कहलवाकर श्रीराम को शिव का अनन्य प्रेमी दर्शाया और सेतु का निर्माण होने पर प्रभु राम

Certified as TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

द्वारा भगवान शिव की प्रतिष्ठा एवं पूजा-अर्चना कराके श्रीराम को भगवान शिव का अनन्य भक्त सिद्ध किया। इतना ही नहीं, अनेक स्थलों पर हम श्रीराम और भगवान शिव में साम्य एवं अभेद रूपता भी देखते हैं।

यथा-**हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुवर की।।** 'रामचरितमानस' में 'रामस्तोत्र' के साथ 'शिवस्तोत्र' की रचना कर पार्थक्य एवं वैषम्य को दूर कर सुन्दर समन्वय स्थापित किया। श्रीराम और भगवान शिव की समान शब्दों में स्तुति का एक और उदाहरण हम 'मानव' में देख सकते हैं-[2]
(तुलसीदास चिन्तन और कला, संपा : इन्दनाथ, पृष्ठ 228)

तुम्ह सम रूप ब्रह्म अबिनासी। सदा एक रस सहज उदासी।
अकल अगुन अज अनघ अनामय। अजित अमोघ शक्ति करुनामय।।

(रामस्तुति)

नमामी शमीशान निर्वाण रूपम्। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहं।।

(शिवस्तुति)

उसी प्रकार हम अन्य क्षेत्रों में भी एकात्मता देख सकते हैं- विभिन्न दर्शनों में एकात्मता

माया बस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान।
ईश्वर अंस जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।

निर्गुण और सगुण में एकात्मता-"अगुन सगुन दुइ ब्रह्म स्वरूपा। अकथ अगाधि अनादि अनूपा।।"

श्रीराम और श्रीकृष्ण में एकात्मता-"तुलसी मस्तक तब नवै, जब धनुष बान लेहु हाथ।" इतना नहीं 'कृष्ण गीतावली' की रचना कर भावी विवाद को भी समाप्त कर दिया।

नर नारायण में एकात्मता-जहाँ कबीर ने-"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना। राम नाम मरम है आना" कहा, वही तुलसी ने "भए प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी" कहकर श्रीराम को दशरथ पुत्र स्वीकार किया।

सभी वर्णों में एकात्मता-'मानस' में गुरु वशिष्ठ निषादराज का मिलन दिखाया वहीं, उच्चकुल में उत्पन्न श्रीराम को तुच्छ वानर भालुओं से प्रेमालिंगन कराते दिखा उच्च एवं निम्न वर्ग में समानता स्थापित की। इसके साथ ही, पारिवारिक

क्षेत्र में समन्वय और राजा प्रजा के बीच समन्वय दिखाया जो कि हर युग की माँग है। इसके अभाव में आदर्श परिवार व समाज की कल्पना भी असंभव है। तुलसीदास जी ने धर्म, राजनीति, परिवार एवं समाज के प्रति समन्वयात्मक दृष्टि रखी। साथ ही, साहित्यिक क्षेत्र में भाषागत विवाद से बचने हेतु प्रचलित ब्रज व अवधी दोनों भाषाओं में 'मानस' की रचना की। इतना नहीं, हिंदी के साथ-साथ संस्कृत भाषा के श्लोकों की रचना करके अपने ग्रंथों में हिंदी और संस्कृत का सुंदर समन्वय किया है, वर्णिक तथा मात्रिक दोनों प्रकार के छंदों का प्रयोग कर छंदसंबंधी समन्वय भी दिखलाया। तुलसी के समन्वयवाद की सबसे बड़ी उपलब्धि काव्य रसों और भक्ति रस के समन्वय में भी दिखलाई पड़ती है। विविध काव्य रसों-वीर, शृंगार, रौद्र, भयानक आदि नौ रसों का तुलसी ने अपने 'मानस' में बड़ा ही सुंदर निरूपण किया है। 'मानस' में त्रिवेणी का संगम है जिसमें भक्ति, काव्य और लोकमंगल तीनों का सुंदर समन्वय दर्शनीय है–

रामभक्ति जंह सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।
बिधि निषेधमय कलिमल हरनी। करम कथा रवि नंदन बरनी।।
हरिहर कथा विराजति बेनी। सुनत संकल मुद मंगल देनी।।

(बालकाण्ड)

सभी प्रकार की शैलियों का प्रयोग जैसे– छप्पय पद्धति का प्रयोग 'मानस' में, पद पद्धति में 'विनय पत्रिका', 'गीतावली' व 'कृष्ण गीतावली' लिखी। दोहा पद्धति में 'दोहावली', चौपाई, दोहा पद्धति में 'रामचरितमानस' का निर्माण किया। सवैया पद्धति में 'कवितावली' और बरवै पद्धति में 'बरवै रामायण' की रचना की। इसके अतिरिक्त लोकगीत व सोहर का भी प्रयोग 'रामलला नहछू' में किया है।

तुलसी ने 'रामचरितमानस' की रचना वैयक्तिक सुख के लिए नहीं, बल्कि लोक कल्याण के लिए की थी। उन्होंने काव्य का उद्देश्य लोक मंगल ही स्वीकार किया है–

इस प्रकार महाकवि तुलसी ने एकात्मता व समन्वयवाद की भावना को सर्वोपरि रखा, क्योंकि वे किसी भी प्रकार की विषमता, कटुता, पतन और भेदभाव को पोषित करना नहीं चाहते थे। फलस्वरूप, सुन्दर व व्यवस्थित समाज, परिवार, गाँव व देश की गौरवपूर्ण व्याख्या की जो समन्वय का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सारांश रूप में महाकवि तुलसीदास ने समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाकर एक सुदृढ़ समाज व देश की स्थापना करनी चाही, क्योंकि इसके अभाव में कटुता, विषमता एवं पतन ही पनप सकता है। अत: तुलसी जैसे समाजसुधारकों की हर युग को आवश्यकता है और सदैव रहेगी।

सन्दर्भ :-

1. *रामचरितमानस-तुलसीदास*
2. *तुलसी की साहित्य साधना-डा. लल्लन राय*
3. *तुलसी और मानवता-सूर्यनारायण भट्ट*
4. *हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि-द्वारिका प्रसाद सक्सेना*
5. *तुलसीदास : चिंतन और कला-संपा. इंद्रनाथ मदान*

□□

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.